मुसन्निफ़:

फ़क़ीह-ए-मिल्लत, ह़ज़रत अ़ल्लामा

मुफ़्ती जलालुद्दीन अह़मद अमजदी

अ़लैहिर्-रह़मह

हिंदी:

शुऐब अह़मद

मिशन क़ादरी वेलफ़ेयर सोसाइटी,

मेम्बर टीम अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

SABIYA

VIRTUAL PUBLICATION

किताबुल्-ईमान

इस्लामी अ़क़ाइद का बयान:

सवाल: आप कौन हैं?

जवाब: मुसलमान।

सवाल: मुसलमान किसे कहते हैं?

जवाब: मुसलमान वो है जो ख़ुदा को एक जाने और सरकार मुस्त़फ़ा ﷺ को ख़ुदा-ए-तआ़ला का भेजा हुआ आख़िरी नबी माने और क़ुरआन शरीफ़ को अल्लाह तआ़ला की किताब यक़ीन करे।

सवाल: आपके दीन का नाम किया है?

जवाब: इस्लाम।

सवाल: इस्लाम का कलिमा किया है?

जवाब: इस्लाम का कलिमा ये है

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ (ﷺ)

इस का नाम कलिमा-ए-त़य्यबा है।

सवाल: इस का मत़लब किया है?

जवाब: इस का मत़लब ये है कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और सरकार मुस्त़फ़ा ﷺ अल्लाह तआ़ला के रसूल हैं।

सवाल: अल्लाह तआ़ला किसे कहते हैं?
जवाब: अल्लाह तआ़ला वो है जिसने हमें पैदा किया। चांद और सूरज बनाया, ज़मीन आसमान और सारी दुनिया को पैदा फ़रमाया।

सवाल: जो अल्लाह तआ़ला को ना माने उसे क्या कहते हैं?
जवाब: उसे काफ़िर कहते हैं।

सवाल: जो अल्लाह तआ़ला के साथ और लोगों को भी इबादत के लाइक़ समझे उसे क्या कहते हैं?
जवाब: उसे काफ़िर और मुशरिक कहते हैं।

सवाल: काफ़िर और मुशरिक होने में क्या ख़राबी है?
जवाब: काफ़िर और मुशरिक से अल्लाह तआ़ला हमेशा नाराज़ रहता है और मरने के बाद उनको हमेशा जहन्नम की आग में रहना पड़ेगा।

सवाल: क्या काफ़िर और मुशरिक जन्नत में कभी नहीं जाऐंगे?
जवाब: नहीं हरगिज़ नहीं बल्कि ये लोग हमेशा जहन्नम में रहेंगे।

सवाल: सरकार मुस्त़फ़ा ﷺ कौन हैं?
जवाब: अल्लाह तआ़ला के रसूल हैं। सब रसूलों से अफ़ज़ल हैं। उनके मर्तबे का कोई नहीं। हम सब उनकी उम्मत में हैं और वो हमारे रसूल हैं।

सवाल: हमारे रसूल सरकार मुस्त़फ़ा ﷺ कहाँ पैदा हुए?

जवाबः मक्का शरीफ़ में पैदा हुए जो मुल्के अ़रब का एक शहर है

सवालः हुज़ूर ﷺ किस तारीख़ में पैदा हुए
जवाब 12 रबीउ़ल् अव्वल शरीफ़ मुताबिक़ 20 अप्रैल 571- ईस्वी में पैदा हुए।

सवालः हुज़ूर ﷺ के वालिद का नाम किया था?
जवाबः हुज़ूर ﷺ के वालिद का नाम हज़रत अब्दुल्लाह था। (रद़ियल्लाहु अ़न्हु)

सवालः हुज़ूर ﷺ की माँ का नाम किया था?
जवाबः हुज़ूर ﷺ की माँ का नाम हज़रत आमिना था। (रद़ियल्लाहु अ़न्हा)

सवालः हुज़ूर ﷺ के दादा और नाना का नाम किया था?
जवाबः हुज़ूर ﷺ के दादा का नाम हज़रत अ़ब्दुल् मुत्तलिब था और नाना का नाम वहब था।

सवालः हमारे रसूल ﷺ कितने बरस ज़िंदा रहे?
जवाबः हमारे रसूल इंतिक़ाल के बाद अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत से अपनी मज़ार शरीफ़ में अब भी ज़िंदा हैं। ज़ाहिरी ज़िंदगी आपकी तिरसठ बरस की हुई। तिरपन बरस की उ़म्र तक मक्का शरीफ़ में रहे फिर दस साल मदीना त़य्यबा में रहे।

सवालः हुज़ूर ﷺ ने किस तारीख़ में वफ़ात पाई?

जवाब: 12 रबीउ़ल् अव्वल 11 हिजरी में वफ़ात पाई।

सवाल: इंतिक़ाल के दिन अंग्रेज़ी तारीख़ क्या थी
जवाब: जून 632 ईस्वी की बारह 12 तारीख़ थी।

सवाल: हुज़ूर ﷺ का मज़ार मुबारक कहाँ है?
जवाब: मदीना शरीफ़ में है जो मक्का मुअ़ज़्ज़मा से तक़रीबन तीन सौ बीस किलोमीटर शुमाल में वाक़े है।

सवाल: ये कैसे मअ़लूम हुआ कि सरकार मुस्तफ़ा ﷺ अल्लाह तआ़ला के रसूल हैं?
जवाब: आप ﷺ ने लोगों को अल्लाह तआ़ला के दीन की तरफ़ बुलाया। तरह तरह के मोजिज़े दिखाए और ग़ैब की ऐसी ऐसी बातें बताएं बताएं बताएँ जो रसूलों के सिवा कोई और नहीं बता सकता। इस से मअ़लूम हुआ कि आप अल्लाह तआ़ला के नबी और रसूल हैं।

सवाल: जो हमारे हुज़ूर ﷺ को ना माने वो किया है?
जवाब: जो हमारे हुज़ूर को रसूल ﷺ ना माने वो काफ़िर है।

सवाल: जो अल्लाह तआ़ला को माने मगर हमारे नबी ﷺ को ना माने वो किया है
जवाब: वो भी काफ़िर है।

सवाल: रसूल ﷺ को मानने का क्या मत़लब है?

जवाब: रसूल अल्लाह ﷺ को मानने का ये मत़लब है कि आप ﷺ को अल्लाह तआ़ला का भेजा हुआ सच्चा नबी यक़ीन करे आप ﷺ की हर बात को ह़क़ माने आप ﷺ से मुह़ब्बत रखे और आप ﷺ की शान में बे-अदबी का लफ़्ज़ ना बोले।

सवाल: क़ुरआन शरीफ़ किसी की किताब है?
जवाब: क़ुरआन शरीफ़ अल्लाह तआ़ला की किताब है।

सवाल: ये कैसे मअ़लूम हुआ कि क़ुरआन शरीफ़ अल्लाह तआ़ला की किताब है?
जवाब: क़ुरआन शरीफ़ की त़रह़ कोई किताब किसी से नहीं बन सकी जिस से मअ़लूम हुआ कि वो अल्लाह तआ़ला की किताब है अगर किसी आदमी की बनाई हुई होती तो कोई और भी वैसी किताब बना लेता।

सवाल: क़ुरआन मजीद किस पर उतरा?
जवाब: हमारे हुज़ूर ﷺ पर नाज़िल हुआ यानी उतरा।

सवाल: पूरा क़ुरआन मजीद एक मर्तबा उतरा या थोड़ा थोड़ा?
जवाब: थोड़ा थोड़ा लोगों की ज़रूरत के मुत़ाबिक़ उतारता रहा।

सवाल: पूरा क़ुरआन मजीद कितने दिनों में नाज़िल हुआ?
जवाब: तिईस साल में।

सवाल: क़ुरआन मजीद कैसे नाज़िल होता था?

जवाब: ह़ज़रते जिब्रील अ़लैहिस्सलाम क़ुरआन मजीद की सूरत या आयत लेकर आते और हुज़ूर ﷺ के सामने ले आते और हुज़ूर ﷺ के सामने पढ़ते हुज़ूर ﷺ उसे याद कर के लोगों को सुनाते लोग उसे याद कर लेते और किसी चीज़ पर लिख लेते।

सवाल: क़ुरआन शरीफ़ में किस चीज़ का बयान है?
जवाब: उस में हर चीज़ का बयान है।

सवाल: ये किताब किस लिए नाज़िल हुई?
जवाब: लोगों को स़ह़ी रास्ता दिखाने के लिए नाज़िल हुई ताकि लोग अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल ﷺ को जाने और उनकी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ काम करें।

सवाल: ह़ज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम कौन हैं?
जवाब: फ़रिश्ते हैं जो रसूलों के पास अल्लाह तआ़ला का हुक्म लाते थे।

सवाल: फ़रिश्ते क्या चीज़ हैं?
जवाब: फ़रिश्ते अल्लाह तआ़ला की एक नूरी मख़्लूक़ हैं। ना मर्द हैं ना औरत, ना कुछ खाते हैं ना पीते हैं। हर-वक़्त अल्लाह तआ़ला की इबादत में लगे रहते हैं।

सवाल: इंसान किस लिए पैदा किया गया?
जवाब: अल्लाह तआ़ला की इबादत करने के लिए।

सवाल: मुसलमान अल्लाह तआ़ला की इबादत कैसे करते हैं?
जवाब: नमाज़ पढ़ते हैं, रोज़ा रखते हैं और मालदार माल की ज़कात निकालते हैं और ह़ज करते हैं।

सवाल: इबादतों में सबसे अफ़ज़ल इबादत कौन सी है?
जवाब: सबसे अफ़ज़ल इबादत नमाज़ है।

सवाल: नमाज़ क्या चीज़ है?
जवाब नमाज़ अल्लाह तआ़ला की इबादत है जो एक ख़ास़ त़रीक़े से अदा की जाती है कि बंदा हाथ बांध कर क़िब्ला की त़रफ़ खड़ा होता है। क़ुरआन शरीफ़ पढ़ता है। अल्लाह तआ़ला के सामने झुक जाता है, पेशानी ज़मीन पर रख देता है, उस की बड़ाई बयान करता है और हुज़ूर ﷺ पर दुरूदो सलाम भेजता है।

सवाल: रात और दिन में कुल कितनी मर्तबा नमाज़ पढ़ी जाती है?
जवाब: पाँच मर्तबा पढ़ी जाती है।

सवाल: उन पाँच नमाज़ो के नाम क्या हैं?
जवाब: फ़ज्र, ज़ुहर, अ़स्र, मग़रिब और इशा।

सवाल: फ़ज्र की नमाज़ कब पढ़ी जाती है?
जवाब: सुबह उजाला होने के बाद सूरज निकलने से पहले पढ़ी जाती है।

सवाल: ज़ुहर की नमाज़ कब पढ़ी जाती है? जवाब ज़ुहर की नमाज़ दोपहर को सूरज ढलने के बाद पढ़ी जाती है।
सवाल: अ़स्र की नमाज़ कब पढ़ी जाती है?

जवाब: सूरज डूबने से घंटा डेढ़ घंटा पहले पढ़ी जाती है।
सवाल: मग़रिब की नमाज़ कब पढ़ी जाती है?

जवाब: मग़रिब की नमाज़ सूरज डूबने के फ़ौरन बाद पढ़ी जाती है।
सवाल: इशा की नमाज़ कब पढ़ी जाती है? जवाब: डेढ़ दो घंटा रात गुज़रने के बाद पढ़ी जाती है।

सवाल: नमाज़ पढ़ने से पहले जो हाथ और मुँह धोया जाता है उसे क्या कहते हैं?
जवाब: उसे वुज़ू कहते हैं।

सवाल: क्या बग़ैर वुज़ू के नमाज़ नहीं हो सकती?
जवाब: नहीं हरगिज़ नहीं।

सवाल: वुज़ू करने का त़रीक़ा किया है?
जवाब: वुज़ू करने का त़रीक़ा ये है कि पहले बिस्मिल्लाहिर् रह्मानिर् रह़ीम पढ़ो, फिर मिस्वाक करो, अगर मिस्वाक ना हो तो उंगली से दाँत मल लो, फिर दोनों हाथों को गट्टे तक तीन बार धोओ, पहले दाहिने हाथ पर पानी डालो फिर बाएँ हाथ पर। दोनों को एक साथ ना धोओ। फिर दाहिने हाथ से तीन बार कुल्ली करो फिर बायीं हाथ

की छोटी उंगली से नाक स़ाफ़ करो और दाहिने हाथ से तीन बार नाक में पानी चढ़ाओ। फिर पूरा चेहरा धोओ यानी पेशानी पर बाल उगने की जगह से ठुड्डी के नीचे तक और एक कान की लू से दूसरे कान की लू हर हिस्से पर तीन बार पानी बहाओ। इस के बाद दोनों हाथ कोहनियों समेत तीन बार धोओ। उंगलीयों की त़रफ़ से कोहनियों के ऊपर तक पानी डालो। कोहनियों की त़रफ़ से मत डालो, फिर एक बार दोनों हाथ से पूरे सर का मसह़ा करो, फिर कानों का और गर्दन का एक एक बार मसह़ा करो, फिर दोनों पांव टख़नों समेत तीन बार धोओ।

सवाल: धोने का मत़लब किया है?
जवाब: धोने का मत़लब ये है कि जिस चीज़ को धोओ उस के हर ह़िस्से़ पर पानी बह जाए।

सवाल: अगर कुछ ह़िस्स़ा भीग गया मगर उस पर पानी नहीं बहा तो वुज़ू होगा या नहीं?
जवाब: इस त़रह़ वुज़ू हरगिज़ नहीं होगा। भीगने के साथ हर ह़िस्से़ पर पानी बह जाना ज़रूरी है।

सवाल: नमाज़ के वक़्त एक आदमी जो खड़े हो कर पुकारता है उसे क्या कहते हैं?
जवाब: उसे अज़ान कहते हैं।

सवाल अज़ान का त़रीक़ा किया है?

जवाबः अज़ान का त़रीक़ा ये है कि वुज़ू करने के बाद किसी ऊंची जगह पर क़िब्ला रुख़ खड़ा हो और दोनों हाथ की कलिमा की उंगलीयों को दोनों कानों में डाले फिर बुलंद आवाज़ से इन अल्फ़ाज़ को कहे:

اَللّٰهُ أَكْبَرُ اللّٰهُ أَكْبَرُ ، اللّٰهُ أَكْبَرُ اللّٰهُ أَكْبَرُ

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ ، أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ

أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللّٰهِ ،

أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللّٰهِ

حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ ، حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ

حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ ، حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ

اَللّٰهُ أَكْبَرُ اللّٰهُ أَكْبَرُ

لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ

फ़ज्र की अज़ान में

حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ

के बाद

اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ

दो बार कहे

सवालः अज़ान के बाद की दुआ़ बतलाइए?

जवाब: अज़ान के बाद ये दुआ़ पढ़ी जाती है:

اَللّٰھُمَّ رَبَّ ھٰذِہِ الدَّعْوَۃِ التَّآمَّۃِ وَالصَّلٰوۃِ الْقَآئِمَۃِ اٰتِ سَیِّدَنَا
مُحَمَّدَ ۨ الْوَسِیْلَۃَ وَالْفَضِیْلَۃَ وَالدَّرَجَۃَ الرَّفِیْعَۃَ وَابْعَثْہُ مَقَامًا
مَّحْمُوْدَا ۨ الَّذِیْ وَعَدْتَّہٗ وَاجْعَلْنَا فِیْ شَفَاعَتِہٖ یَوْمَ الْقِیٰمَۃِ اِنَّکَ
لَاتُخْلِفُ الْمِیْعَادَ

सवाल: अज़ान के कुछ देर बाद फिर बुलंद आवाज़ से पुकारते हैं उसे क्या कहते हैं:

जवाब: उसे तस्वीब और स़लात कहते हैं।

सवाल: उस के अल्फ़ाज़ क्या हैं?

जवाब: उस के लिए शरअ़ ने कोई अल्फ़ाज़ मुक़र्रर नहीं किए हैं, कोई भी मुनासिब अल्फ़ाज़ कह सकते हैं आज कल आम त़ौर से इस क़िस्म के अल्फ़ाज़ कहे जाते हैं:

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ
اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ
اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ
اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا خَیْرَ خَلْقِ اللّٰہ
اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا عَرُوْسَ مَمْلُکَۃِ اللّٰہ
وَعَلٰی اٰلِکَ وَ اَصْحٰبِکَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا شَفِيْعَنَا يَوْمَ الْجَزَآءِ

सवालः नमाज़ शुरू होने से पहले एक आदमी जो बुलंद आवाज़ से पढ़ता है उसे क्या कहते हैं?
जवाबः उसे तकबीर कहते हैं।

सवालः तकबीर के अल्फ़ाज़ क्या हैं?
जवाबः तकबीर के अल्फ़ाज़ वही हैं जो अज़ान के अल्फ़ाज़ हैं फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है किः

حَيَّ عَلَى الْفَلَاح

कि बाद दो बार

قَدْ قَامَتُ الصَّلاةُ

ज़्यादा कर दिया जाता है।

सवालः तकबीर बैठ कर सुनना चाहिए कि खड़े हो कर?
जवाबः बैठ कर सुनना चाहिए फिर जब तकबीर कहने वाला

حَيَّ عَلَى الْفَلَاح

पर पहुंचे तो सबको खड़े हो जाना चाहिए।

सवालः अज़ान कहने वाले को क्या कहते हैं?
जवाबः अज़ान कहने वाले को मुअ़ज़्ज़िन या बाँगी कहते हैं।

सवालः तकबीर कहने वाले को क्या कहते हैं?
जवाबः मुकब्बिर कहते हैं।

सवाल: अकेले नमाज़ पढ़ने वाले को किया कहते हैं?
जवाब: अकेले नमाज़ पढ़ने वाले को मुनफ़रद कहते हैं।

सवाल: जो नमाज़ सब लोग मिलकर पढ़ते हैं उसे किया कहते हैं।
जवाब: उसे जमाअ़त की नमाज़ कहते हैं।

सवाल: पढ़ाने वाले को क्या कहते हैं?
जवाब: पढ़ाने वाले को इमाम कहते हैं।

सवाल: जो लोग पीछे रहते हैं उन्हें क्या कहते हैं?
जवाब: उन्हें मुक़तदी कहते हैं।

सवाल: नमाज़ पढ़ने का त़रीक़ा किया है?
जवाब: नमाज़ पढ़ने का त़रीक़ा ये है कि जो नमाज़ पढ़नी है पहले दिल में उस की नीय्यत करो और नीय्यत के अल्फ़ाज़ ज़ुबान से कह लो तो बेहतर है। मसलन: फ़ज्र की नमाज़ पढ़नी है तो यूं कहो।

नीय्यत:
नीय्यत की मैंने दो रकअ़त नमाज़ फ़ज्र फ़र्ज़ की वास्ते़ अल्लाह तआ़ला के मुँह मेरा कअ़बा शरीफ़ की त़रफ़ फ़िर दोनों हाथ कानों तक ले जाओ और अल्लाहु अकबर कहते हुए वापिस लाओ और नाफ़ के नीचे बांध लो। दाहिना हाथ ऊपर रखो और बायां हाथ उस के नीचे रहे फिर सना पढ़ो।
सना:

سُبْحَانَکَ اللّٰھُمَّ وَ بِحَمْدِکَ وَ تَبَارَکَ اسْمُکَ وَتَعَالٰی جَدُّکَ

وَلَا اِلٰہَ غَیْرُکَ

फिर तअ़व्वुज़ पढ़ो।

तअ़व्वुज़:

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

फिर तस्मिया पढ़ो।

तस्मिया:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

फिर सूरह फ़ातिह़ा पढ़ो।

सूरह फ़ातिह़ा:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ (۱) الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ (۲) مٰلِكِ يَوْمِ

الدِّيْنِ (۳) اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ (۴) اِهْدِنَا الصِّرَاطَ

الْمُسْتَقِيْمَ (۵) صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ (۶) غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ

عَلَيْهِمْ وَ لَا الضَّآلِّيْنَ (۷)

सूरह फ़ातिह़ा के आख़िर में आहिस्ता आमीन कहो फिर तस्मिया यानी बिस्मिल्लाहिर् रह़्मानिर् रह़ीम पढ़ कर कोई सूरत पढ़ो मसलन

सूरह लहब:

تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّ تَبَّ (١) مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَ مَا كَسَبَ (٢)
سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ (٣) وَّ امْرَاَتُهٗ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ (٤) فِيْ
جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ (٥)

फिर अल्लाहु अकबर कहते हुए रुकूअ़ में जाओ यानी झुक कर घुटने को हाथों से मज़बूत़ पकड़ लू फिर कम से कम तीन बार रुकूअ़ की तस्बीह़ पढ़ो।

रुकूअ़ की तस्बीह़:

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ

फिर तस्मी कहते हुए सीधे खड़े हो जाओ।

तस्मी:

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَه

फिर खड़े रहने की ह़ालत में एक बार तह़मीद कहो।

तह़मीद:

رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ

फिर अल्लाहु अकबर कहते हुए सजदे में चले जाओ। इस त़रह़ कि पहले घुटने ज़मीन पर रखो। फिर हाथ फिर दोनों हाथों के बीच में नाक फिर पेशानी रखो और दोनों पांव की सब उंगलीयों के पेट ज़मीन पर जमाऐ रखो और कम से कम तीन बार सजदे की तस्बीह़ पढ़ो।

सजदे की तस्बीह़:

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰی

फिर तकबीर यानी अल्लाहु अकबर कहते हुए उठो, दाहिना पांव खड़ा रखो और बायां पांव बिछा कर उस पर ख़ूब सीधा बैठ जाओ फिर इसी त़रह़ दूसरा सजदा करो। अब एक रकअ़त पूरी हो गई। दूसरी रकअत के लिए तकबीर कहते हुए खड़े हो जाओ इस रकअ़त में सना और तअ़व्वुज़ ना पढ़ो बल्कि सिर्फ़
तस्मिया यानी बिस्मिल्लाहिर् रह़्मानिर् रह़ीम पढ़ने के बाद सूर फ़ातिह़ा पढ़ो और तस्मिया पढ़ कर कोई सूरत मिलाओ मसलन

सूरह इख़लास़:

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ (۱) اَللّٰهُ الصَّمَدُ (۲) لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ (۳) وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ (۴)

अब पहली रकअ़त की त़रह़ रुकूअ़ और सजदे करो। दूसरे सजदे से फ़ारिग़ हो कर बैठ जाओ फिर तशह्हुद और दुरूद शरीफ़ पढ़ो। बिस्मिल्लाह ना पढ़ो।

तशह्हुद:

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّيِّبَاتُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

दुरूद शरीफ़:

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ کَمَا
صَلَّیْتَ عَلٰی سَیِّدِنَا اِبْرَاھِیْمَ وَعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا اِبْرَاھِیْمَ اِنَّکَ
حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ اَللّٰھُمَّ بَارِکْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا
مُحَمَّدٍ کَمَا بَارَکْتَ عَلٰی سَیِّدِنَا اِبْرَاھِیْمَ وَعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا
اِبْرَاھِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ

फिर इस त़रह़ की कोई दुआ़ पढ़ो।

दुआ़:

اَللّٰھُمَّ رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا
عَذَابَ النَّارِ

उस के बाद दाहने कंधे की त़रफ़ मुँह कर के

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰہ

कहो फिर बाएं तरफ़ भी इसी त़रह़ कहो। ये दो रकअ़त पूरी हो गई अब हाथ उठा कर यूं दुआ़ करो।

اللهم أنت السلام ومنك السلام وإليك يرجع
السلام، فحيّنا ربنا بالسلام وأدخلنا دار السلام تباركت
ربنا وتعاليت يا ذا الجلال والإكرام

इस दुआ़ से फ़ारिग़ हो कर दोनों हाथ मुँह पर फेर लो।

सवाल: रुकूअ़ से उठकर खड़े होने की ह़ालत को क्या कहते हैं?
जवाब: क़ूऊद कहते हैं।

सवाल: सजदा से उठकर बैठने की ह़ालत को क्या कहते हैं?
जवाब: दोनों सजदे के दरमयान बैठने की ह़ालत को जलसा कहते हैं और तशह्हुद पढ़ने के लिए बैठने को क़अ़दा कहते हैं।

सवाल: अत्तह़िय्यात के शुरु में बिस्मिल्लाह
पढ़ना चाहिए या नहीं?

जवाब: अत्तह़िय्यात के शुरु में बिस्मिल्लाह
नहीं पढ़ना चाहिए।
(फ़तावा रज़विय्यह)

सवाल: मुक़तदी इमाम के पीछे तअ़व्वुज़
और तस्मिया पढ़े या ना पढ़े?
जवाब: मुक़तदी इमाम के पीछे सि़र्फ़ सना पढ़ कर ख़ामोश खड़ा रहे तअ़व्वुज़ और तस्मिया ना पढ़े और ना किसी रकअ़त में सूरह फ़ातिह़ा और ना दूसरी सूरह पढ़े।

सवाल: मुक़तदी سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَہٗ पढ़े या ना पढ़े?

जवाब: ना पढ़े बल्कि रुकूअ़ से खड़ा हो कर सि़र्फ़ رَبَّنَا لَکَ الْحَمْدُ पढ़े।

सवाल: नमाज़ के बाद उंगलियों पर गिन कर क्या पढ़ते हैं?

जवाब: 33 बार सुब्हान अल्लाह, 33 बार अल्हम्दुलिल्लाह, 34 बार अल्लाहु अकबर पढ़ते हैं। इस के पढ़ने में बहुत ज़्यादा सवाब है।

इस्लामी आदाब:

(1) पांचों वक़्त नमाज़ पढ़ा करो। नमाज़ पढ़ने में इधर उधर ना देखो और नमाज़ इत्मिनान से पढ़ो जल्दी जल्दी ना पढ़ो।

(2) क़ुरआन शरीफ़ रोज़ाना पढ़ा करो क़ुरआन शरीफ़ का अदब करो उस से ऊंची जगह पर ना बैठो।

(3) माँ बाप का कहना मानो, उनका अदब करो उन्हें ख़फ़ा ना होने दो।

(4) उस्ताज़ का अदब करो, उस्ताज़ माँ बाप से बढ़कर हैं। वो तुम्हें दीनो मज़हब की बातें बताते हैं और भले बुरे की तमीज़ सिखाते हैं।

(5) चलते फ़िरते कोई चीज़ ना खाओ, नंगे सर खाना बुरा है खाने से पहले बिस्मिल्लाहिर् रह्मानिर् रह़ीम
पढ़ो, बग़ैर हाथ धोए खाना ना खाओ। दाहने हाथ से खाओ बाएं हाथ से कोई चीज़ ना खाओ। खाने में चपड़ चपड़ की आवाज़ ना पैदा करो। एक वक़्त में दूध और मछली ना खाओ खाने से फ़ारिग़ हो कर ये दुआ़ पढ़ो:

الحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي أَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَكَفَانَا وَجَعَلَنَا مِنَ

المُسْلِمِينَ

(6) पानी और चाय वग़ैरा कोई चीज़ बाएं हाथ से ना पियो। हमेशा दाहने हाथ से पियो। वुज़ू का बच्चा हुआ पानी और आबे ज़म-ज़म खड़े हो कर पीना चाहिए। बाक़ी पानियों को खड़े हो कर पीना बुरा है। पीने के बादः

"अल्ह़म्दुलिल्लाह" कहो

(7) क़िब्ला की त़रफ़ मुँह या पीठ कर के पाख़ाना पेशाब ना करो लोगों के सामने पाख़ाना पेशाब ना करो बल्कि किसी चीज़ की आड़ में करो। बैठ कर पेशाब करो खड़े हो कर पेशाब करना बुरा है। लोगों के सामने घुटना खोल कर पेशाब के लिए ना बैठो। पाजामा का इज़ार-बंद खोल कर पेशाब करो, पाजामा के पाइचा से पेशाब ना करो पेशाब करते वक़्त या पाख़ाना फ़िरते वक़्त किसी से बात ना करो। पाख़ाना पेशाब के मक़ाम को बाएं हाथ से धो दाहने हाथ से धोना बुरा है।

दुआ़-ए-कुनूत और इस्लामी कालिमे।

दुआ़-ए-क़ुनूतः

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَ نَسْتَغْفِرُكَ وَ نُؤْمِنُ بِكَ وَ نَتَوَكَّلُ

عَلَيْكَ وَنُثْنِىْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ وَ نَخْلَعُ

وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّىْ وَنَسْجُدُ

وَاِلَیْکَ نَسْعٰی وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوْ رَحْمَتَکَ وَنَخْشٰی عَذَابَکَ اِنَّ عَذَابَکَ بِالْکُفَّارِ مُلْحِقٌ

अव्वल कलिमा तय्यब:

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ (ﷺ)

दूसरा कलिमा शहादत:

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

तीसरा कलिमा तमजीद:

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم

चौथा कलिमा तौहीद:

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَ لَهُ الْحَمْدُ يُحْيٖ وَ يُمِيْتُ وَ هُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ اَبَدًا اَبَدًا ؕ ذُو الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ ؕ بِيَدِهِ الْخَيْرُ ؕ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ؕ

पांचवा कलिमा इस्तिग़फ़ार:

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّیْ مِنْ کُلِّ ذَنْۢبٍ اَذْنَبْتُهٗ عَمَدًا اَوْ خَطَاً سِرًّا اَوْ عَلَانِیَةً وَّاَتُوْبُ اِلَیْهِ مِنَ الذَّنْۢبِ الَّذِیْۤ اَعْلَمُ وَ مِنَ الذَّنْۢبِ الَّذِیْ لَاۤ اَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ وَ سَتَّارُ الْعُیُوْبِ وَ غَفَّارُ الذُّنُوْبِ وَ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ ط

छठा कलिमा रद्दे कुफ्र

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ اَنْ اُشْرِكَ بِكَ شَیْئًا وَّاَنَاۤ اَعْلَمُ بِهٖ وَ اَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَاۤ اَعْلَمُ بِهٖ تُبْتُ عَنْهُ وَ تَبَرَّأْتُ مِنَ الْکُفْرِ وَ الشِّرْكِ وَ الْکِذْبِ وَ الْغِیْبَةِ وَ الْبِدْعَةِ وَ النَّمِیْمَةِ وَ الْفَوَاحِشِ وَ الْبُهْتَانِ وَ الْمَعَاصِیْ کُلِّهَا وَ اَسْلَمْتُ وَ اَقُوْلُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ط

ईमाने मुजमल

اٰمَنْتُ بِاللّٰه کَمَا هُوَ بِاَسْمَائِه وَ صِفَاتِه وَقَبِلْتُ جَمِیْعَ اَحْکَامِه، اِقْرَارٌم بِاللِّسَانِ وَ تَصْدِیْقٌم بِالْقَلْبِ

ईमाने मुफ़स्सल:

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وملائکته وَ کُتُبِه وَرَسُوْلِه وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْقَدْرِ خَیْرِه وَشَرِّه مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰی وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ

हिंदी ज़ुबान में हमारी दूसरी किताबें और रसाइल :

बहारे तहरीर (अब तक 13 हिस्सों में)
अल्लाह त'आला को ऊपरवाला या अल्लाह मियाँ कहना कैसा?
अज़ाने बिलाल और सूरज का निकलना
इश्के मजाज़ी - मुंतखब मज़ामीन का मजमुआ
गाना बजाना बंद करो, तुम मुसलमान हो!
शबे मेराज गौसे पाक
शबे मेराज नालैन अर्श पर
हज़रते उवैस क़रनी का एक वाकिया
डॉक्टर ताहिर और वक़ारे मिल्लत
ग़ैरे सहाबा में रदिअल्लाहु त'आला अन्हु का इस्तिमाल
चंद वाकियाते कर्बला का तहक़ीक़ी जाइज़ा
बिंते हव्वा
सेक्स नॉलेज
हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम के वाकिये पर तहक़ीक़
औरत का जनाज़ा
एक आशिक़ की कहानी अल्लामा इब्ने जौज़ी की ज़ुबानी
40 अहादीसे शफा'अत
हैज़, निफ़ास और इस्तिहाज़ा का बयान बहारे शरीअत से
क़ियामत के दिन लोगों को किस के नाम के साथ पुकारा जाएगा?
ज़न और यक़ीन
ज़मीन साकिन है
शिर्क क्या है? - अल्लामा मुहम्मद अहमद मिस्बाही

ABOUT US

Abde Mustafa Official Is A Team
From **Ahle Sunnat Wa Jama'at**
Working **Since 2014** On The Aim To Propagate
Quraan And Sunnah
Through Electronic And Print Media.

We are :

Writing articles, composing & publishing books, running a special **matrimonial service** for Ahle Sunnat

Visit our official website :

www.abdemustafa.in
about thousand of articles & 150+ tehqeeqi pamphlets & books are available in Urdu, Roman Urdu & Hindi

E Nikah Matrimony

www.enikah.in
If you are searching a Sunni Life Partner then visit and find.
there is also a channel on Telegram
t.me/Enikah (Search "E Nikah Service" on Telegram)

Find & Follow us on Social Media Network :

Subscribe us on YouTube | abdemustafaofficial
Facebook & Instagram | abdemustafaofficial
Telegram Channel | t.me/abdemustafaofficial
Books Library on Telegram | t.me/abdemustafalibrary
or search "Abde Mustafa Official" on Google
for more details WhatsApp on **+919102520764**

SABIYA
SABIYA VIRTUAL PUBLICATION

POWERED BY ABDE MUSTAFA OFFICIAL
AMO